दिव्य धाम दर्शन

(यात्रा-संस्मरण)

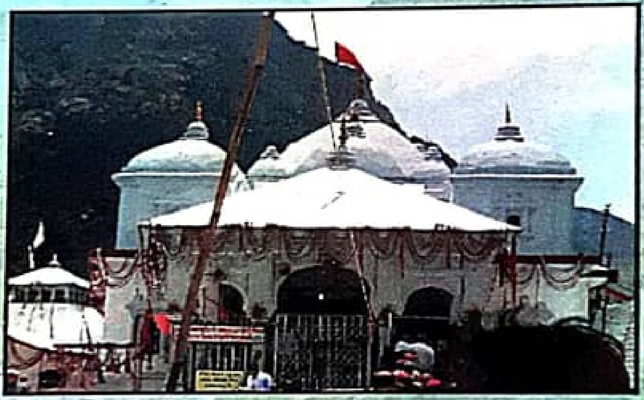

श्रीमती लक्ष्मी बरसैया

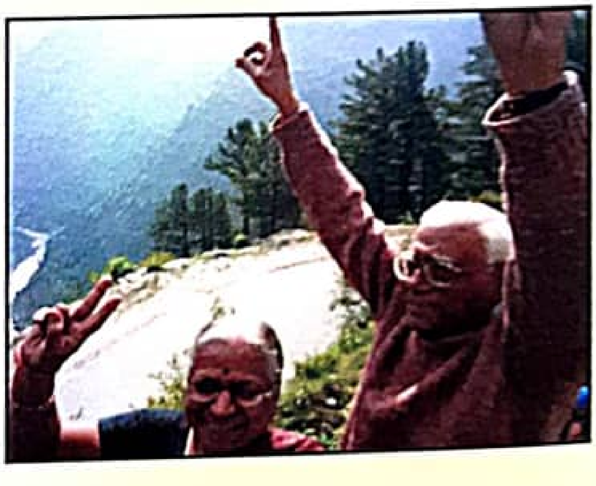

'दिव्य धाम दर्शन'

(यात्रा-संस्मरण)

श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया

प्रकाशक एवं मुद्रक

अरविन्द प्रिन्टर्स

सी-19, टैगोर नगर, रायपुर (छ.ग.) दूरभाष : 0771-2431149

सन् 2012

समर्पण ...

अपने नन्हे-मुन्ने

पौत्र-पौत्रियों एवं

नवजात प्रपौत्र को

स्नेह

एवं

शुभाशीष सहित ...

मेरे मनोभाव . . .

यूँ तो यात्रा को सफर कहा जाता है.... शायद इसलिये कि प्रायः यह कष्टप्रद होती हैं, परंतु यदि यात्रा किसी पावन स्थान विशेष की हो तो वह रास्ते की तमाम कठिनाइयों से दूर निकलकर यात्री के स्मृति–पटल पर अंकित हो जाती है, सदा के लिये, अविस्मरणीय स्मृतियों के साथ । ऐसी यात्रायें यात्री की अपनी निजी धरोहर होती हैं, परंतु जब यात्रा का विवरण यात्री की कलम से निकलकर कागज पर उतरता है तो वह यात्रा हर एक पाठक के हृदय में जीवंत हो उठती है । स्मृतियों की यह अमूल्य धरोहर एक लेखक का उद्‌गम पाकर निकल पड़ती है उस बड़ी यात्रा की ओर जिसमें वह तमाम पाठकों की स्मृतियों में स्थान पाती चली जाती है । सरल शब्दों के साथ यात्रा का क्रम चलता है और तमाम दृश्य सामने साकार होने लगते हैं। इसीलिये यात्रा– विवरण प्रायः पाठकों को सम्मोहित करते रहे हैं ।

मेरी माता जी श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया ने भी यह प्रयास किया । प्रारंभ से ही उनकी चार–धाम यात्रा की बड़ी प्रबल इच्छा थी । जीवन की अनेक जिम्मेदारियों का सफल निर्वाह करने के पश्चात यह यात्रा दो चरणों में पूर्ण हुई । पहली यात्रा तीन धाम – द्वारका, रामेश्वरम व जगन्नाथपुरी की थी और दूसरी यात्रा इसके लगभग 11 वर्षों बाद बद्रीनाथ धाम की । पहली यात्रा में मम्मी व पापा डॉ0गंगाप्रसाद बरसैंया अकेले गये थे । यह यात्रा 45 दिनों की थी और वह भी विशेष रेलगाड़ी से । अनेक आशंकाओं को निर्मूल सिद्ध करते हुए यात्रा कराने वाली कंपनी ने बहुत ही आनंद एवं सुविधाजनक ढंग से यात्रा करायी । इसके बाद शेष बचा था बद्रीनाथ धाम । काफी समय पश्चात सुखद संयोग आया और यह यात्रा भी पूर्ण हुई । इस यात्रा का आनंद और भी कई गुना बढ़ गया क्योंकि इस बार मम्मी–पापा के साथ मैं और मेरी दो बहनें भी सपरिवार सम्मिलित हुए । यात्रा की पूरी योजना भिलाई निवासी मेरी बड़ी बहन डॉ0 श्रीमती रीता व जीजाजी श्री मधुसूदन कनकने ने बनाई । उन्हें इस यात्रा का कई बार का अनुभव भी था । इसलिये सभी के अंदर व्याप्त पहाड़ी मार्ग का भय भी कुछ कम हुआ । उनके दोनों बच्चे अपूर्वा व सुयश सभी का उत्साहवर्धन करते रहे । भोपाल निवासी मेरी बड़ी बहन श्रीमती रजनी, जीजाजी श्री उमाशंकर खरया व उनकी दोनों पुत्रियाँ – अंकिता व निकिता भी यात्रा में साथ चलीं । साथ में मैं, मेरी पत्नी श्रीमती रचना एवं दोनों बच्चे

अनन्या व उत्कर्ष भी थे । अनन्या व उत्कर्ष इस दल के सबसे छोटे सदस्य थे । मेरी सबसे बड़ी बहन रायपुर निवासी श्रीमती रश्मि व जीजाजी श्री अशोक कुमार गुप्ता किन्ही कारणों से इस यात्रा में नहीं जा सके । इस यात्रा में जहां सभी लोगों ने परम पुनीत धार्मिक स्थानों के दर्शन से स्वयं को धन्य किया वहीं प्रकृति के सर्वोच्च अनुपम व अलौकिक सौंदर्य का प्रत्यक्ष आनंद लिया । धार्मिक आस्था व रोमांचक अनुभवों से परिपूर्ण इस यात्रा में उत्तराखण्ड के चारों धाम – यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ व बद्रीनाथ धाम के दर्शन हुए । साथ में रास्ते के नयनाभिराम दृश्य मानों सभी के लिये अमूल्य धरोहर बन गये।

यह विवरण मम्मी यात्रा के साथ–साथ ही लिखती गयीं । और जब हाल ही में मैंने इन्हें पढ़ा तो लगा कि ये अनुभव यदि एक पुस्तक का आकार लेंगे तो इससे अनेक लोग लाभान्वित हो सकते हैं । इसका पूरा श्रेय मेरे पिताजी डॉ0गंगाप्रसाद बरसैंया को जाता है जो स्वयं एक प्रख्यात साहित्यकार व शिक्षाविद हैं। उनके कारण हमेशा से घर में साहित्यिक व सर्जनात्मक माहौल रहा है। पापा ने स्वयं लगभग 40 पुस्तकों का सृजन किया है । उन्हीं की प्रेरणा से मम्मी ने भी कलम उठायी है । दोनों में अंतर यह है कि जहॉ पापा का सृजन सोच समझ कर किया गया कार्य है वहीं मम्मी ने इसे डायरी रूप में बिना किसी अतिरिक्त सोच विचार के लिख डाला है । निश्चित रूप से यह पुस्तक बड़ी सहजता और सरलता के साथ सभी पाठकों के हृदयों में चार धाम यात्रा व मार्ग के सौंदर्य के अनुभवों को लेकर गहरे तक उतरती चली जायेगी ।

विगत 11 मई 2011 को रायपुर में हम सभी ने पापा–मम्मी के विवाह की 50वीं वर्षगांठ बड़े हर्ष व उल्लास के साथ एक आत्मीय आयोजन में मनाई । वे दोनों इसी प्रकार स्वस्थ एवं सानंद रहें, दीर्घायु हों व हम सभी पर अपने आशीर्वाद की वर्षा करते रहें, इसी कामना के साथ,

अभिलाष बरसैंया
शाखा प्रबंधक
भारतीय जीवन बीमा निगम
शाखा कमांक–2
रायपुर, छत्तीसगढ़
0771–2583125, 9425471659

श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया

जन्म	:	21 जून 1945
जन्म स्थान	:	जबलपुर, मध्यप्रदेश
शिक्षा	:	एम0ए0 हिन्दी
सृजन	:	कई कहानियां व कवितायें तथा लोकगीत । एक प्रकाशित कृति 'लोक–वाटिका' ।

एक कहानी 'कामचोरी की सजा' म0प्र0 पाठ्यपुस्तक निगम की कक्षा 3 की सहायक वाचन में वर्षों तक पढ़ाई जाती रही ।

आकाशवाणी छतरपुर से अनेक वार्ताएं व परिचर्चा प्रसारित ।

पिता–माता	:	स्व0 श्री पुरुषोत्तम दास हूंका एवं स्व0 श्रीमती कस्तूरी देवी
पति	:	डॉ0 गंगाप्रसाद बरसैंया, एम.आइ.जी.12, चौबे कॉलोनी, छतरपुर, म0प्र0

पुत्रियां–दामाद–पौत्र–पौत्रियां–प्रपौत्र :

1. श्रीमती रश्मि व श्री अशोक कुमार गुप्ता
   रायपुर, छ.ग.
   पुत्र : अनुभव , पुत्रवधू : श्रीमती गुंजन
   एवं नवजात पौत्र
   पुत्री : कु. अनुभूति

2. श्रीमती रजनी व श्री उमाशंकर खरया
   भोपाल, म.प्र.
   पुत्रियां: कु0 अंकिता
   कु0 निकिता

3. डॉ0 श्रीमती रीता व श्री मधुसूदन कनकने
   भिलाई,छ.ग.
   पुत्री : कु. अपूर्वा
   पुत्र : सुयश

पुत्र–पुत्रवधू–पौत्र–पौत्री:

1. अभिलाष बरसैंया व श्रीमती रचना बरसैंया
   रायपुर, छ.ग.
   पुत्री : कु. अनन्या
   पुत्र: उत्कर्ष